REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2023

स्त्री अस्मिता और स्त्री का संघर्षमय जीवन

रविकान्त वर्मा [1] , डॉ मीना गौतम [2]
[1]शोधार्थी, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविधालय अलवर राजस्थान |
[2]शोध निर्देशक,एसोसियट प्रोफ़ेसर (हिंदी विभाग), बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविधालय अलवर राजस्थान |

सार:-

पूरी दुनिया में स्त्री के नाम, पहचान, और निस्वार्थ भाव के कार्यों पर चिंतन, लेखन और शोध कार्य होते आये हैं इस एक वजह से मालूम होता है कि स्त्री अस्मिता कितना महत्वपूर्ण और गूढ़ विषय है। पुरुषवादी आचरण व पितृसत्तात्मक सोच को मध्यनजर रखते हुए स्त्री की अस्मिता पर गहन अध्ययन और प्रभावशाली हो जाता है। क्या ये समाज महिला व पुरुष को समानता की श्रेणी में रखता है? आज का परिवेश कहता है दोनो समाज के अभिन्न अंग है। गाड़ी के दो पहियों को महिला व पुरुष बताया है अगर एक पहिया कार्य नही करेगा तो गाडी नहीं चलेगी तथा दूसरी तरफ सदियों से महिला को पैरो की जूती समझा जाता रहा है अब दोनों अर्थ अलग अलग हैं जब भी पुरुष को जरूरत पड़ी स्त्री कंधे से कन्धा मिलकर साथ चली, अब वो जरूरत घर चलाने से लेकर घनघोर युद्ध लड़ने तक रहा , रिसर्च से लेकर अतंरिक्ष में अनुसन्धान तक हर पहलु इसमें शामिल है फिर भी पुरुषों के मुकाबले उनको हमेशा कम आँका गया है अगर आज के सन्दर्भ में एक उदाहरण लिया जाये तो क्रिकेट इसका उदाहरण है जिसमें पुरूषों को जो सुविधाएँ, पैसा और मान सम्मान मिलता है, क्या स्त्रीयों को वो सब मिलता है? जवाब होगा नहीं | सभी को ग्रहस्थ जीवन से गुजरना पड़ता है जिसमें आज भी महिला को सिर्फ किचन कोकरोच कहा जाता है उसमें आज भी महिला को खाना बनाना पडता है अपने बड़ों को, फिर पति और बच्चों को तथा अन्त में स्वयं को मिलता है। स्त्री का संघर्ष सुबह उठने से लेकर रात के सोने तक जारी रहता है। क्या इस सब के बावजूद उनको श्रेय मिलता है ? इस पितृ सत्तात्मक सोच व पुरुषवादी सोच के बंधनों से निकलने की छटपटाहट के बीच स्त्री अस्मिता कहाँ नजर आती हैं ? आज के परिवेश में बड़े शहरों व सभ्य समाज में पहले की तरह स्त्री के पैरो में बेडियां भले ही नहीं हो लेकिन वो पूरी तरह से आज़ाद आज भी नहीं है सामाजिक कुरीतियों व सांस्कृतिक सभ्यता के नाम पर आज भी स्त्रीयों को दबाया जाता है | सुनन्दा पराशर ने भारतीय नारी की विवशता को चंद पंक्तियों में व्यंगात्मक रूप से पिरोया हैं

‘परदा उठाऊँ तस कितना पर उठाऊँ’
और उठाऊँ तो कितना उठाऊँ”

पूरे विश्व में महिलाओं के प्रति विभिन्न प्रकार के अत्याचार, घरेलु हिंसा व बलात्कार की घटनायें ये साबित करती हैं कि महिलाएँ भले ही कहने को आज़ाद हो, लेकिन ये घटनाएँ और विश्व क्राइम रिपोर्ट ये साबित करती हैं की स्त्रीयों के लिये अभी बहुत संघर्ष बाकी है। सुबह घर के दरवाजे से निकलने से लेकर रात को घर में प्रवेश करने तक उसका जीवन संघर्षो से भरा पडा है। बीसवी सदी में सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनितिक, विज्ञानवाद, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा का प्रचार आदि कारणों में बदलाव ने समाज में स्त्री अस्मिता को बल मिला |

परिचय :-

स्त्री अस्मिता का अर्थ स्त्री के गुणों का वर्णन करना, स्त्री के आत्म सम्मान और सांस्कृतिक – सामाजिक समझ के तहत न मिलने वाले गुणों को पहचान लेना है| जिस परिवेश में स्त्री रहती है उस परिवेश में खुद को पहचान के हिसाब से खुद का मूल्यांकन करना, आखिर मैं हूँ कौन? मेरी इस परिवेश में इज्जत क्या है? मेरी पहचान क्या है? स्त्री अस्मिता की परिभाषा चंद शब्दों या किसी सीमित फ्रेम में नहीं की जा सकती | स्त्री अस्मिता वास्तव में है क्या? स्त्री अस्मिता उसकी खुद की सम्यकता, स्त्री की खुद की पहचान, स्त्री की स्वायत्ता, उसकी स्वतंत्रता से है |

स्त्री अस्मिता से जुडे प्रश्न पर और स्त्री के सार्वभौमिक अस्तित्व के सम्बन्ध में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी जी ने कहा नारी – स्वतंत्रता भारत के लिए विलासिता नहीं है, अपितु राष्ट्र की भौतिक, वैचारिक और आत्मिक संतुष्टि के लिए अनिवार्य बन गई है |

डॉ. भीमराव आंबेडकर जी ने भारतीय संविधान में स्त्री मुक्ति के लिए अनुच्छेद 15(1) द्वारा लिंग के आधार पर किये जाने वाले भेद को समाप्त किया और अनुच्छेद 14 द्वारा स्त्री को पुरुष के समान बराबरी का दर्जा दिलाया एवं समान कार्य के लिए समान वेतन मिलने की व्यवस्था की|

उन्नीसवी शताब्दी या उससे पहले स्त्रीयों के लिए घोर अन्धकार था| बीसवीं शताब्दी में सांस्कृतिक , धार्मिक, राजनैतिक, विज्ञानवाद, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा का प्रचार आदि कारणों में बदलाव से समाज में स्त्री अस्मिता को पहचान मिलना शुरू हुआ | ये ही काल था जब स्वत्रंतता संग्राम जोर पकड रहा था, शिक्षा का प्रचार- प्रसार हो रहा था, धार्मिक सुधार आन्दोलन चल रहे थे, समाज सुधार आन्दोलन पुरानी सोच को तोड़ रहे थे ऐसे में स्त्री पारम्परिक सोच और रूढ़िवादिता के बंधन को तोड़कर स्वंतत्र होकर आसमान में उड़ने का सपना देख रही थी | इस सोच को और बल तब मिला जब जन शिक्षा के प्रसार ने रफ्तार पकड़ी, तमाम पत्रिकाएँ और पत्रकार स्त्री अस्मिता के लिए आवाज उठाने लगे, ये वो दोर था जब पुरानी सोच, मान्यताओं और चुनौतियों को पीछे छोड़ स्त्री उड़ने को बेताब थी और अपने स्वाभिमान के लिए लड़ना शुरू कर दिया |

साहित्य की समीक्षा :-

स्त्री अस्मिता को विभिन्न लेखकों और विद्वानों ने परिभाषित किया है जब हम इन्हें पढ़ते हैं तो मालूम होता है स्त्री अस्मिता क्यों जरुरी है| कितना लम्बा समय लगा यहाँ तक पहुँचने में -

1. एक अज्ञात हिन्दू औरत ने 1882 में सीमंतनी उपदेश में लिखा की तमाम् हिन्दुस्तान में तलाश करने से शायद सौ पचास ही निकलेंगे जो स्त्रियों को इंसान जानते है |

2. पंडिता रमा बाई ने 1987 में दा हाई कास्ट हिन्दू वूमन (THE HIGH CASTE HINDU WOMEN) के अनुसार सिर्फ अतीत के गौरव की खोखली बातों से कुछ नहीं होता, स्त्रीयों को उनका हक़ दो, तभी वे और उनकी संतान मुकम्मल इंसान बन पायेगी |
3. तारा बाई शिंदे ने 1882 में स्त्री पुरुष तुलना के अनुसार पुरुष अपने आप को स्त्रीयों से इतना भिन्न क्यों समझता है?... उनके बीच ऐसी क्या भिन्नता है की पत्नी के मरने से पति पर कोई आफत नहीं आती वह जब चाहे दूसरा विवाह कर ले, पर पति के मरने से विधवा स्त्री को ऐसे-ऐसे दुःख दिए जाते हैं मानो उसने अपने पति को मारा हो ? ये दोहरे मापदंड क्यों ?
4. रुकैया सखावत हुसैन ने 1905 में सुल्ताना का सपना में लिखा की जब स्त्रीयां पढ़ती हैं, सोचती हैं और लिखने लगती है तो वे उन बातों पर भी सवाल उठाने से कतई गुरेज नहीं करती, जिनकी बुनियाद पर गैरबराबरियों से भरा मरदाना निजाम टिका है |
5. सावित्री बाई फुले के 1854 में काव्य फुले के अनुसार चौका बर्तन से बहुत जरुरी है पढाई... क्या तुम्हें मेरी बात समझ में आई?
6. सुरेन्द्र नाथ सिंह के अनुसार स्त्री अस्मिता का अर्थ अंहता, विधमानता अथवा होने का भाव अर्थात वस्तु के स्वरुप का सम्यक संबोध कराने वाली तत्वमयता उसकी अस्मिता है |
7. महादेवी वर्मा के अनुसार पुरुष के सम्मान स्त्री भी कुटुंब, समाज, नगर तथा राज्य की विशिष्ट सदस्य हैं तथा जिसकी समस्त क्रिया का प्रतिफल सबके विकास में बाधा भी डाल सकता है और उसके मार्ग को प्रशांत भी कर सकता है |

महिलाओं के पैरों में बंधे बन्धनों से उनकी आज की स्थिति तक का सफ़र आसान नहीं रहा, सदियों से महिलाओं पर सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं अनेक बंदिशे लगा दी गई जिसके कारण उन्हें जीवन में आगे बढ़ने और स्वयं के समुचित विकास करने के अवसर छीन लिए गए, ऐसी स्थिति में स्त्री का दम घुटना लाजमी था | राख में दबी चिंगारी को धीरे धीरे हवा शोला बना देती है ठीक उसी प्रकार महिला समाज में मिले अपने स्थान से परेशान थी उसे धीरे धीरे शोला बनना ही था और इसका परिणाम निकला महिला आज़ादी के आन्दोलन |

विश्व में महिला अधिकार आन्दोलन

1. **इतिहास का पहला आर्थिक नारी अधिकार आन्दोलन :-** खाने और आर्थिक समस्याओं से झूझती छोटे छोटे हथियारों के साथ 7000 महिलायें 5 अक्टूबर, 1789 को पोरिस के बाजार में एकत्रित हुई । इन महिलाओं ने शाही महल पर आक्रमण कर अपनी बातें मनवाने के लिए आन्दोलन किया |
2. **महिला मुक्ति आंदोलन :-** अमेरिका ने 1960 और 70 के दशक में महिलाओं ने समान अधिकार, सामान अवसर और अधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन किया |
3. **ब्रा बर्निंग मिस अमेरिका मार्च:-** 7 सितम्बर 1968 को अटलांटिकसिटी कन्वेंशन सेंटर के सामने ऊँची एडी की सैंडल, मेकअप, हेयर स्प्रे , ब्रा अन्य सामान को फेंक कर अपने हक के लिए आन्दोलन की शुरुआत की |

4. **द लेडिज होम जर्नल :-** महिलाओं के चित्रों को बेहतर तरीके से नही दिखाने, महिलाओं पर लेख लिखने के लिए महिला आडिटर चीफ की नियुक्ति , सम्पादकीय टीम में महिलाओं की नियुक्ति, फ्री डे सर्विस, और अपने वेतन विसंगतियों को दूर करने के लिए आन्दोलन किया।
5. **समान अधिकार संशोधन मार्च:-** लैंगिक भेदभाव ख़त्म करने और महिला स्वाभिमान के लिए ये आन्दोलन हुआ।

भारत में स्त्री अस्मिता के लिए सुधार

भारत में स्त्री अस्मिता का इतिहास बहुत अच्छा नही रहा है, आज के परिवेश तक आने के लिए स्त्री अस्मिता को बहुत सी अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा है | स्त्री अस्मिता के संधर्भ में जागरूकता के प्रमुख कारक है

1. **सामाजिक और धार्मिक सुधार**:- भारत में अन्धविश्वास के मकड़जाल में महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी| जन्म के समय बच्चियों को मारना , बाल विवाह, बहु विवाह, दासी प्रथा, विधवा जीवन, सती प्रथा, अशिक्षा, धर्म की आडम्बर और सामाजिक बंधन ये सभी मिलकर स्त्री जीवन को नरक बना रहे थे | समय समय पर महिलाओं और तमाम समाज सुधारक राजा राम मोहन राय , ईश्वर चंद विधासागर, दयानंद सरस्वती आदि ने मिलकर स्त्री अस्मिता के लिए काम किया |
2. **शिक्षा का प्रचार** :- भारतीय समाज में महिलाओं को पढने का अधिकार नही था इसलिए महिला अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं थी फलस्वरूप उनका शोषण होने लगा | जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार होता गया महिलायें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी और वो आंदोलित हो उठी |
3. **पाश्चात्य आन्दोलन का प्रभाव**:- अन्य देशो में लगातार नारी सुधार आन्दोलन हो रहे थे जिसके प्रभाव भारत पर भी पड रहा था| लेखकों की कलम भी नारी सुधार विषय पर क्रांतिकारी लेख लिख रही थी जिसका असर भारतीय महिलाओं के जहन पर पड़ा और वो अपने अधिकारों के प्रति आंदोलित हो उठी |
4. **भारतीय संघठनो का गठन:-** ब्रह्म समाज ,प्रार्थना समाज, सत्यशोधक समाज, आर्य समाज आदि विभिन्न संघठनो ने नारी सुधार के लिए काम किया और महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूक किया |
5. **आंदोलनों में प्रमुख महिलायें :-** भारत में नारीवादी आंदोलनों की कुछ आलोचना हुई क्योंकि विशेष रूप से विशेषाधिकार प्राप्त महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित करने और गरीब या निम्न समझी जाने वाली महिलाओं के अधिकारों के प्रति ध्यान नही देना प्रमुख कारण था।नारी आन्दोलन और नारी जागरूकता अभियान में कुछ प्रमुख नाम निम्न है –

1. **सावित्री बाई फुले:-** ये नाम महिलाओं की जागरूकता के लिए मील का पत्थर साबित हुआ जिसने भारतीय उपमहाद्वीप में लडकियों के लिए पहला विधालय शुरू किया इनका प्रमुखता से साथ फातिमा शेख ने दिया।
2. **ताराबाई शिंदे :-** "पुरुष-स्त्री तुलना" पर लिखा पहला लेख नारीवाद का पहला लेख बना।
3. **पंडिता रमाबाई :-** अंग्रेजो के समय में महिला अधिकारों के लिए लड़ने के लिए इनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है।
4. **कामिनी राय :-** भारत में स्नातक करने वाली प्रथम महिला, कवयित्री और नारी म्तार्थिनी के लिए जानी जाती है।

5. **सरला देवी चौधुरानी:-** प्रथम भारतीय महिला महामंडल की स्थापना करने वाली महिला बनी जो आजीवन महिला हितों के लिए लड़ी |
6. **सरोज नलिनी दत्त व् दुर्गा बाई-** महिलाओ के अधिकार, उनके आत्म-सम्मान और उनकी मुक्ति के लिए लड़ने के लिए इनका नाम प्रमुखता से आता है |

बर्निचा बागची, जशोधरा बागची, रीता बनर्जी, मीरा दत्त गुप्ता, मेघना पंथ, देवकी जैन, व्रन्दा करात, मधु किन्नर और बहुत सी प्रमुख महिलाओ ने नारी सुधार और उनके सम्मान में कार्य किया | साथ ही उस कई आन्दोलन ऐसे थे जिनमे महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर कार्य किया| चिपको आन्दोलन. ताड़ी विरोध आन्दोलन, नक्सलवादी आन्दोलन हुए जिसके महिलाओं के संघर्ष और भागीदारी की चर्चा हर तरफ होने लगी जिससे महिलाओं में हौसला भर दिया|

भारतीय नारी की चुनौतियां :-

भारत में स्त्री दशा और दिशा दोनों ही बहुत ख़राब थी हमेशा से उसका जीवन बहुत सारी चुनौतियों से भरा रहा है आज के परिवेश में स्त्रीयों को निम्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है –

1. अपने मनपसन्द लक्ष्य को चुनने की चुनौती
2. अपनी प्रतिभा के अनुसार अवसरों को चुनने की चुनौती
3. शिक्षा पाने की चुनौती
4. परिवार में बेटों के बराबर हक पाने की चुनौती
5. स्वयं के विवाह के अधिकार की चुनौती
6. विवाह के बाद अपने लक्ष्य को बचाने की चुनौती
7. अपने परिवार तथा कामकाज के बीच सामंजस्य की चुनौती
8. माँ बनने की चुनौती
9. बच्चे के लालन-पालन की चुनौती
10. बच्चों में संस्कार की चुनौती
11. समाज में मान-सम्मान पाने की चुनौती

वर्ष 1924 में जन्म से लेकर 8 वर्ष तक बाल पत्नियों की संख्या नीचे सारणी में प्रदर्शित है-

आयु	बाल पत्नी
0-1	13292
1-2	16643
2-3	89620
3-8	26502

सारणी :- चाँद में छपा लेख, महिला समाज सम्बन्धी कुछ महान समस्याएं

इस लेख मे छपे आंकडे ये दर्शाते हैं कि पूर्व में स्त्री की हालात बहुत दयनीय थी जब बच्चियों पर तरस नहीं खाया जाता था तो स्त्री अस्मिता का सवाल तो कोसों दूर था |

भारत में स्त्री अस्मिता और विवशता :-

हम आज इक्कीसवी सदी में है लेकिन पुरुषवादी सोच और स्त्री पर हमारे पूर्ण अधिकार की सोच ने स्त्री को डरने और विवश करने पर मजबूर कर दिया है दो साल की बच्ची हो या अस्सी साल की औरत सभी खुद को सुरक्षित महसूस नही करती हैं लगातार बढती यौन हिंसा, बलात्कार और अन्य अत्याचारों से पीड़ित स्त्री ने अपनी विवशता चंद पंक्तियों में बयां की है-

मेरे ख्वाब जो जुड़े है तुम से भी,
चाहत है इत्ती सी, मेरे ख्वाब हकीकत बन जाने दो ।
पितृ सत्तात्मक तुम्हारी सोच है पुराना किस्सा,
रगबत है इत्ती सी, बन्धन तोड गर्व से सर उठाने दो ।
जिन्दगी के हर मोड़ पर कभी संघर्ष देखो मेरा,
चाह है इत्ती सी, मेरी उडान को पंख लग जाने दो।
इस जमीं पर पैर रखने से सोने तक,
फ़ातिहा है इत्ती सी, आँसुओ के सैलाब को रुक जाने दें।
खुद को लेकर मेरी खुद से उमंग है कई,
आरजू है इत्ती सी, मुझे सिर्फ मेरी जिंदगी जीने दो ।
दिल के जज्बात है बहुत लेकिन ये गागर में सागर है,
मैं तुम्हारी बहन, पत्नी और माँ हूँ,
गुजारिश है इत्ती सी, बस मेरी अस्मिता ना खोने दो।

उपसंहार :-

स्त्री अस्मिता अपने मूल स्वरुप में उसके सम्मान, आत्म सम्मान, गरिमा, प्रतिष्ठा तथा स्वयं की पहचान है स्त्री ऐसा जीवन चाहती हैं जिस पर किसी का जोर न हो, किसी का बंधन न हो, किसी की गुलामी नही हो और किसी भी प्रकार का धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक बंधन न हो| स्त्री सही मायने में अपने फैसले स्वयं लेना चाहती हैं वो नही चाहती की वो अब किसी के बंधन में रहे| स्त्री अपनी दास्ताँ स्वयं लिखना चाहती हैं|

बड़े शहर जो खुद को सुरक्षित और महफूज कहते है असल में अँधेरी और सुनसान सडकों पर महिलायें सुरक्षित नहीं हैं| स्त्री अस्मिता से जुड़े कल और आज को देखने पर महसुस होता है की आगे अभी स्त्री का संघर्ष बहुत बाकि है|

नारी अस्मिता नारी के व्यक्तित्व की विशिष्ट एवं विलक्षण पहचान है जो उसके समाज की विलक्षण ऐतिहासिकता एवं वास्तविक अथवा मिथकीय अतीत से जोडती है। यह निजत्व का भाव है जिसमें स्त्री की इच्छा और अनिच्छा महत्वपूर्ण होती है यह नारी में अहंभाव उत्पन्न करते हुए स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की ख्वाहिश भी व्यक्त करती है।

महिलाओं ने अपने हक और अधिकार के लिए संघर्ष किया और अपना स्थान पुरुष के बराबर किया उन्होंने अपने देश के लिए, खुद के लिए व संपूर्ण सृष्टि के लिए और आने वाली पीढियों के लिए और खुद के

लिए इतना कठिन संघर्ष किया है उसी के कारण आज स्त्री पाताल से लेकर अन्तरिक्ष तक पुरुषों के बराबर कंधे से कन्धा मिलाकर चलती हैं लेकिन फिर भी स्त्री अस्मिता की कसक उनके जहन में नजर आती है|

संदर्भ ग्रंथ – सूची

1. भगवानदास मोरवाल : बाबल तेरा देस में, 2004
2. भगवानदास मोरवाल : रेत, 2008
3. सुनन्दा परासर : हिंदी नवजागरण और स्त्री अस्मिता
4. दीप्ती प्रिय महरोत्रा : भारतीय महिला आन्दोलन
5. डॉ एस राधाकृष्णन : भारतीय संस्कृति कुछ विचार , 2014
6. मृणाल पाण्डे : परिधि पर स्त्री, 1996
7. रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय, 2015
8. रमणिका गुप्ता : स्त्री - विमर्श कलम और कुदाल के बहाने
9. बदरी प्रसाद : प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास, 2007
10. कविता संग्रह : हरीश कुमार कुंद्रा
11. सुशील वर्मा : आधुनिक समाज की नारी चेतना, 1998